



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

अजीत समाचार

19.06.2021

--

--

उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग पर्यावरण व जीवों हेतु घातक : प्रो. काम्बोज



बैठक में उपस्थित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर वी.आर. काम्बोज व अन्य।

हिसार, 18 जून (देवानंद) : वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का अस्तुतिल मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जो संपूर्ण मानव जाति के अलावा पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर वी.आर. काम्बोज ने कहे। ये विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महा उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. सई दास व

अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सह्यायत विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में

अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस बैठक आयोजित

अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुणा अधिक होता है। उर्वरकों की अधिक मात्रा में उपयोग से धान, गेहूं व कपास आदि फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी की बजाए स्थिर हो गई है। इनके अधिक उपयोग से भूमि के स्वास्थ्य व भूमिगत जल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इससे चर्मरोग,

कैंसर, खास रोग जैसे अनेक रोग उत्पन्न हो रहे हैं जो घातक हैं। उन्होंने कहा कि उर्वरकों का अधिक प्रयोग धीरे-धीरे जमीन के अंदर समा जाते हैं और उनके दूरगामी दुष्प्रभाव सामने आते हैं। खाद्य श्रृंखला में भी रासायनिक तत्वों की मात्रा पाई गई है।

वैज्ञानिकों की सलाहनुसार करें उर्वरकों का प्रयोग : उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटेश की सिफारिश की गई मात्रा का ही प्रयोग किया जाना चाहिए जबकि मौजूदा आंकड़ों के अनुसार इनका प्रयोग कई गुणा अधिक किया जा रहा है जो बहुत ही नुकसानदायक है। बैठक में कुलपति के ओएसडी डॉ. अतुल कुमार डींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सह्यायत, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास खंडा, मानव संसाधन निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया, मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

<u>समाचार पत्र का नाम</u>	<u>दिनांक</u>	<u>पृष्ठ संख्या</u>	<u>कॉलम</u>
<u>सच कहूँ</u>	<u>19.06.2021</u>	<u>--</u>	<u>--</u>

उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक: प्रो. कंबोज



■ अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर विकास केंद्र के अधिकारियों के साथ किया मंथन

हिसार(सच कहूँ न्यूज)। वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का अस्तुलित मात्रा में अपने खेतों

में प्रयोग कर रहे हैं जो संपूर्ण मानव जाति के अस्वास्थ्य पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है। वे बिहार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर सी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मका उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. सई दास व अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ.

वरापाल साहाका विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का अस्तुलित मात्रा में अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुणा अधिक होता है। उर्वरकों की अधिक मात्रा में उपयोग से धान, गेहूँ व कपास आदि फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी की बजाए स्थिर हो गई है। इनके अधिक उपयोग से भूमि के स्वास्थ्य व भूमिगत जल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टुडे न्यूज	19.06.2021	--	--

उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक : प्रो. काम्बोज

टुडे न्यूज | हिसार

वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जो संपूर्ण मानव जाति के अलगाव पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. सई दास व अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल महारावत विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुणा अधिक होता है।



उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार लाइसेंस, फास्फोरस व पोटाश की सिफारिश की गई मात्रा का ही प्रयोग किया जाए चाहिए जबकि मौजूदा अंकड़ों के अनुसार इसका प्रयोग कई गुणा अधिक किया जा रहा है जो बहुत ही नुकसान करक है। वैज्ञानिकों की सलाहनुसार थिना मिट्टी-पानी की जांच के असंतुलित मात्रा में केवल यूरिया व डीएपी के प्रयोग से जमीन में गैज तथा जैसे कैल्शियम, मैगनेशियम, सल्फर व सूक्ष्म पोषक तत्व जिंक, लौह, कॉपर, मैंगनीज, बोरेल आदि की कमी हो रही है। उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे रसायनिक उर्वरकों का कम से कम प्रयोग करें और वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार मिट्टी की जांच के आधार पर प्रयोग करें, जो व बेव्यव पर्यावरण वरिष्क जीव-जंतुओं के लिए भी फायदेमंद होगा। अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक

डॉ. यशपाल महारावत ने बताया कि विश्व स्तर पर कई ऐसी तकनीक हैं जो रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग को कम करने में सहायक हैं। इन्हें जल्द ही विश्वविद्यालय के सहयोग से अपनाने का प्रयास किया जाएगा। भविष्य में एकात्म व अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र संयुक्त रूप से मिलकर रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग को कम करने के लिए काम करेंगे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. सई दास ने विश्वविद्यालय की ओर से इस क्षेत्र में सहयोग करने के लिए प्रस्ताव जमा किया। बैठक में कुलपति के ओएसटी डॉ. अतुल कुमार डींगरा, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. महारावत, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामकिशोर डांडा, मानव संसाधन निदेशक डॉ. एस.एस. सिद्धपुरिया, सूक्ष्म विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मन्वोज कुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग	19.06.2021	--	--

उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

हिसार। पर्यावरण सशक्त में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान उर्वरकों के अधिक उपयोग के लिए सतत रूप से रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग में आगे बढ़ने में प्रवृत्त कर रहे हैं जो अंधाधुंध प्रयोग के अभाव पर्यावरण के लिए भी खतराकार है। ये प्रयोग भी-भी जल स्रोत अतिरिक्त कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महाका उपपट्टन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. रवींद्र ठापर व अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के



बैठक में कुलपति बी.आर. काम्बोज के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज व अन्य।

निदेशक डॉ. मारकस म्हात्तक विशेष रूप से धीरे-धीरे कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुना अधिक होता है। उर्वरकों की अधिक मात्रा से उपयोग से

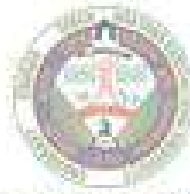
भवन, मृदा व वायुमंडल प्रदूषण के कारण से खेती की फसल गिरा हो गई है। इनके अधिक उपयोग से भूमि के स्वास्थ्य व क्षतिग्रस्त हो पा रहा है। इससे खेती, बीमार, रक्तस रोग जैसे अनेक रोग उत्पन्न हो रहे हैं जो घातक है। उन्होंने कहा कि उर्वरकों का

अधिक प्रयोग भी-भी जल स्रोत के अंदर खतरा उत्पन्न कर रहा है। जल स्रोत में अंधाधुंध प्रयोग से जल स्रोत में अनेक खतरा उत्पन्न हो रहा है जो खतरा उत्पन्न कर रहा है। उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग मिट्टी-जल की मात्रा के अंधाधुंध प्रयोग से जल स्रोत में अनेक खतरा उत्पन्न हो रहा है जो खतरा उत्पन्न कर रहा है।

उर्वरकों की अंधाधुंध प्रयोग उर्वरकों का प्रयोग

उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग मिट्टी की मात्रा के अभाव पर प्रयोग करने, जो कि अनेक पर्यावरण खतरा उत्पन्न कर रहा है जो खतरा उत्पन्न कर रहा है। अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. मारकस म्हात्तक ने कहा कि किसान को यह ध्यान रखना है जो अंधाधुंध प्रयोग के अभाव पर प्रयोग करने, जो कि अनेक पर्यावरण खतरा उत्पन्न कर रहा है जो खतरा उत्पन्न कर रहा है। अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. मारकस म्हात्तक ने कहा कि किसान को यह ध्यान रखना है जो अंधाधुंध प्रयोग के अभाव पर प्रयोग करने, जो कि अनेक पर्यावरण खतरा उत्पन्न कर रहा है जो खतरा उत्पन्न कर रहा है।

अधिक प्रयोग भी-भी जल स्रोत के अंदर खतरा उत्पन्न कर रहा है। जल स्रोत में भी खतरा उत्पन्न कर रहा है जो खतरा उत्पन्न कर रहा है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

हाड़ौती अधिकार

18.06.2021

हाड़ौती अधिकार

फरीदाबाद शुक्रवार, 18 जून, 2021

जल की बूंद-बूंद को बचाना होगा : डा. रामनिवास

खेती में जल संरक्षण विषय पर ब्लॉक स्तरीय वर्चुअल किसान गोष्ठी आयोजित

मुन्ना सिंह / अधिकार संचालकता

फरीदाबाद, 17 जून। आज कृषि विज्ञान केंद्र धौलपुरी द्वारा खेती में जल संरक्षण विषय पर ब्लॉक स्तरीय किसान गोष्ठी का वर्चुअल रूप से आयोजन किया गया।

केंद्र के ज्येष्ठ समन्वयक डॉ. चिन्मयपाल यादव ने इस गोष्ठी में विशेष तौर पर आयोजित मुख्य अतिथि के रूप में जुड़े चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिमालय विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास तथा ध्यान से रहे किसानों, महिलाओं, नवप्रवृत्तों व जिले के कृषि व बागवानी विभाग के अधिकारियों व विस्तार कार्यकर्ताओं का स्वागत करते हुए खेती में जल संरक्षण की महत्ता तथा जल संरक्षण की लेकर बनायी गयी अनेक प्रकार की योजनाएँ की अवगत में लाने का आग्रह किया।

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने किसानों को सचेत किया कि जलसम्पुर्ण परिवर्तन के कारण वर्तमान में जल संकट बहुत गहरा गया है। आज कल के हालात की देखते हुए पानी की बिकट संधारण आने वाले दिनों में होने की आशंका है इसलिए हमें जल को संरक्षित करने एवं बूंद-बूंद को बचाने का प्रयास



करना चाहिए। जल संरक्षण करना आम नागरिक का कर्तव्य है। जल संरक्षण के लिए के.सी.के. वेजमिनकी द्वारा गाँव गाँव तक किसानों में जागरूकता फैलाये। उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे खेती में जल संरक्षण की तकनीकों विशेष तौर पर धान में सोधी बीजवाई, ट्रिपल व फव्वारा सिंचाई, लेजर लेवलर द्वारा खेती के समतलीकरण आदि को अपनाकर कृषि में जल के दुरुपयोग को रोक जा सकता है। कम पानी से उगाई जाने वाली फसलों को अपनाने पर सतत रिया।

कार्यक्रम में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिमालय विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. एस. एस.

पुनिया ने फसलों में जल संरक्षण सम्बन्धी अनेक तकनीकों जैसे धान की सोधी बीजवाई, जौरी टिल तकनीक से गेहूँ की बीजवाई, खेती की लेजर लेवलर तकनीक द्वारा समतल बनाना, फसलों में मलिन्या का प्रयोग, सूखे को रोकने वाली फसलों की किसानों की लगाना आदि अनेक तकनीकों पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी तथा कहा कि किसान धीरे धीरे इन तकनीकों को अपनाकर खेती में प्रयोग होने वाले पानी को बचत कर सकते हैं।

बागवानी विभाग फरीदाबाद के बागवानी विकास अधिकारी डॉ. सुरेशचंद ने बागवानी एवं सब्जी फसलों में ट.प.क। सिंचाई तकनीकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	18.06.2021	--	--

बैठक अंतर्राष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित

उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक : प्रोफेसर काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा बन रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जो संपूर्ण मानव जाति के अलावा पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है। ये विचार सौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर पी.आर. काम्बोज ने कहे। ये विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महा उपायन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. माई दास व अंतर्राष्ट्रीय उर्वरक मिशन केंद्र के निदेशक डॉ. पराशर महाराज विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिखाया भी गई मात्रा से कई गुना अधिक होता है। उर्वरकों की अधिक मात्रा में उपयोग से खून, गैहू व कपास आदि फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी की



हिसार। बैठक में दौलत मौजूद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर पी.आर. काम्बोज व अन्य।

वैज्ञानिकों की सलाहनुसार करें उर्वरकों का प्रयोग

उत्तमो विद्यासे ते अहम किम कि ये वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटेश की सिफारिश की गई मात्रा का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। वैज्ञानिकों की सलाहनुसार मिल मिट्टी-कली की जांच के असंतुलित मात्रा में केवल सूरिय व खीरों के प्रयोग से जमीन में गीला तल जैसे पैरिलोस, पैरिलोस, लुकर व लुकर घेसक तल किक, लीर, कोकर, कोकरीन, कोकरीन आदि की कली से लरी है। उत्तमो विद्यासे ते अहम किम कि ये रासायनिक उर्वरकों का कल से कल प्रयोग करें और वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार मिट्टी की जांच के आडर पर प्रयोग करें, जो न केवल पर्यावरण क्लिष जीव-जंतुओं के लिए ही घातक है। अंतर्राष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. पराशर महाराज ने बताया कि बिना सल पर कई ऐसी तकनीक है जो रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग को कम करने में सहायक है। इनमें अल्टी वैश्वविद्यालय के सलसे से अलसे का प्रयोग किया जाकर।

बजाए स्थिर हो गई है। इनके अतिरिक्त उपयोग से भूमि के स्वास्थ्य व भूमिगत जल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

बैठक में कुलपति के ओएससी डॉ. अतुल कुमार दौलत, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. महाराज, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ.

समीक्षा डॉ. मानव संस्थान निदेशक डॉ. एस.एस. मिश्रापुरिया, मुंड विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	18-6-2021	03	3-4



ऑनलाइन कार्यक्रम में बोलते एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज।

उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण और जीवों के लिए घातक : प्रो. कांबोज

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का अंसतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं, जो संपूर्ण मानव जाति के अलावा पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है।

यह कहना है चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज का। वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. साई दास व अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास

केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत विशेष रूप से मौजूद रहे। अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत ने बताया कि विश्व स्तर पर कई ऐसी तकनीक है जो रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग को कम करने में सहायक हैं। इन्हें जल्द ही विश्वविद्यालय के सहयोग से अपनाने का प्रयास किया जाएगा। वक्ताओं ने कहा कि आज जरूरत है कि किसानों को जागरूक करें कि वे उर्वरकों का प्रयोग न करें। ये जमीन और स्वास्थ्य दोनों के लिए घातक है। बैठक में कुलपति के ओएसडी डॉ. अतुल कुमार ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ढांडा, मानव संसाधन निदेशक डॉ. एमएस सिद्धपुरिया, मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज शर्मा मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

दैनिक भास्कर

18-6-2021

02

7

तीसी बोले- उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक है



भास्कर न्यूज़ | हिसार

वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जो संपूर्ण मानव जाति के अलावा पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है। ये विचार एचएयू कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने व्यक्त किए।

वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. साईं दास व अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुणा अधिक होता है। उर्वरकों की अधिक मात्रा में उपयोग से धान, गेहूं व कपास आदि फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी की बजाए स्थिर हो गई है। इनके अधिक उपयोग से भूमि के स्वास्थ्य व भूमिगत जल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इससे चर्मरोग, कैंसर, श्वास रोग जैसे अनेक रोग उत्पन्न हो रहे हैं जो घातक है। बैठक में डॉ. अतुल कुमार ढींगड़ा, डॉ. एसके सहरावत, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ढांडा, मानव संसाधन निदेशक डॉ. एमएस सिद्धपुरिया, मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	18-6-2021	02	1 से 3

‘उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक: प्रो. काम्बोज’

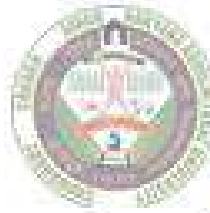
अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित



हिसार, 18 जून (पकेस): वर्तमान समय में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए लगातार रसायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं जो संपूर्ण मानव जाति के अलावा पर्यावरण के लिए भी खतरनाक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे।

वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय उर्वरक दिवस पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मक्का उत्पादन केंद्र के पूर्व निदेशक डॉ. साई दस व अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केंद्र के निदेशक डॉ. यशपाल सहरावत विशेष रूप से मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि

बैठक में दौरान मौजूद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज व अन्य किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई मात्रा से कई गुणा अधिक होता है। उर्वरकों की अधिक मात्रा में उपयोग से धान, गेहूं व कपास आदि फसलों के उत्पादन में बर्बादारी की बजाय स्थिर हो गई है। इनके अधिक उपयोग से भूमि के स्वास्थ्य व भूमिगत जल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इससे चर्मरोग, कैंसर, श्वास रोग जैसे अनेक रोग उत्पन्न हो रहे हैं जो घातक हैं। उन्होंने कहा कि उर्वरकों का अधिक प्रयोग धीरे-धीरे जमीन के अंदर समा जाते हैं और उनके दूरगामी दुष्प्रभाव सामने आते हैं। खाद्य शृंखला में भी रसायनिक तत्वों की मात्रा पाई गई है। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की सिफारिश की गई मात्रा का ही प्रयोग किया जाना चाहिए जबकि मौजूदा आंकड़ों के अनुसार इनका प्रयोग कई गुणा अधिक किया जा रहा है जो बहुत ही नुकसान दायक है। बैठक में कुलपति के ओ.एस.डी. डॉ. अतुल कुमार ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ढांडा, मानव संसाधन निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया, मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मन्वोज कुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	18.06.2021	--	--

उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए घातक: प्रो. काम्बोज

पल पल न्यूज: हिसार, 18 जून। पर्यावरण संरक्षण में उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग पर्यावरण व जीवों के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो घातक है। किसान फसलों के अधिक उत्पादन के लिए रासायनिक उर्वरकों का अतिव्यक्ति मात्रा में प्रयोग करने में प्रयोग कर रहे हैं जो अत्यंत खतरा उत्पन्न के खतरा पर्यावरण के लिए भी खतराकारक है। डॉ. चरण चौधरी द्वारा विश्व हरियाणा जूनिवर्सिटी पर्यावरण विभाग के कक्षाओं में प्रोफेसर की अति-प्रमुखता में है। वे विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित एक बैठक को संबोधित कर रहे हैं। बैठक में भारतीय जूनिवर्सिटी पर्यावरण के साथ उत्पादन केन्द्र के मुख्य निदेशक डॉ. मंडल दास व अंतरराष्ट्रीय उर्वरक विकास केन्द्र के निदेशक डॉ. बलराम बलराम विशेष रूप से मौजूद रहे। उन्होंने बताया कि किसान बिना वैज्ञानिक परामर्श के उर्वरकों का अतिव्यक्ति मात्रा में अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय द्वारा सिखाया जा रहा है। यह मात्रा में बहुत अधिक होता है। उर्वरकों को अधिक मात्रा में प्रयोग में धान, गेहूँ व कजुम आदि फसलों के उत्पादन में फसलों को खतरा स्थिर हो गई है। इसके अधिक उपयोग से जल के सहायक व प्रदूषण जल पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इससे समुद्री, केंचुआ, शंख जैसी अनेक रीत-उपरीत जीवों को खतरा है। उन्होंने कहा कि उर्वरकों का अधिक प्रयोग धीरे-धीरे जल के सहायक जीवों को खतरा स्थिर हो गई है और उनके दुष्प्रभाव सामने आने लगे हैं।